

विचार बिन्दु

चापलूसी का ज़हरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि आपके कान उसे अमृत समझ कर पी न जाएँ।

—प्रेमचंद

बड़ी संपदा है ई-कचरा

वस्तुओं के उपभोग के मामले में पूरी दुनिया स्पष्टतः दो हिस्सों में बंटी हुई है। एक वह दुनिया है जिसे हर चीज़ नई और बेहतर चाहिए, और दूसरी वह दुनिया है जो उसके पास जो है उससे गहरा लगाव रखते हुए उसे ही बरतते रहना चाहती है। भारत में हम आम तौर पर एक कहावत जैसी उक्ति सुनते हैं—'दादा खरीदे, पोता बरते!' हम चीज़ों के साथ स्थायी रिश्ता बनाते हैं और उस रिश्ते की वजह से जब तक भी मुमकिन होता है उन्हीं पुरानी चीज़ों को बरतते रहते हैं। न केवल बरतते रहते हैं, इस बात पर गर्व भी करते हैं कि कोई चीज़ हमारे पास कितने समय से है! लेकिन इसी के बरकस एक और दुनिया है जिसमें हर चीज़ पलक झपकते-झपकते ही पुरानी हो जाती है और उसे बरतने वाले उससे निजात पाकर उसी चीज़ के नए और बेहतर संस्करण को पाने के लिए लालाचिह्न हो उठते हैं। यह मानसिकता बहुत यत्न पूर्वक निर्मित की गई है।

आप पर चारों तरफ से होने वाले विज्ञापनों की बौछार आपको पुराने से छुटकारा पाने और नए को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। उत्पादक तरह-तरह की योजनाएँ बनाकर आपको ललचाते हैं कि आप अपने पुराने उत्पाद से छुटकारा पाएँ और नया ले लें। आखिर आप कितना बचेगे उनके फैलाये जाल से! मोबाइल के नए मॉडल आ जाते हैं, धरेलू उपकरणों के पिछले रूपों में थोड़ा बदलाव कर उनके नए अवतार बाज़ार में आपको आवाज़ देते हैं, सॉफ्टवेयर और तकनीकों के मामले में तो यह और भी अधिक होता है। किसी उपयोगिता से आपका ठीक काम चल रहा है लेकिन क्योंकि उसकी निर्माता कंपनी को आपकी जेब से पैसा खींचना है, वह उस उपयोगिता के लिए अपना तकनीकी समर्थन देना बंद करने की घोषणा कर देती है और आप विवश हो जाते हैं नई उपयोगिता खरीदने के लिए। यही हार्डवेयर के मामले में भी होता है। मान लीजिए मेरे पास दस साल पहले खरीदा एक प्रिन्टर है। अब उसके लिए ड्राइवर (एक तरह का सॉफ्टवेयर) नहीं मिलता तो मुझे उस अच्छे भले और बढ़िया तरह से काम कर रहे प्रिन्टर को कबाड़े में डाल कर नया खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ता है। विभिन्न उत्पादों के निर्माता तरह-तरह के अभियान चलाकर आप पर एक मानसिक दबाव बनाते हैं कि आप पुराने उत्पाद को फेंक कर नया उत्पाद खरीदें। उनके द्वारा काम में ली गई युक्तियाँ का ही परिणाम होता है कि हममें से बहुत सारे लोग अपने अच्छी तरह से चल रहे उपकरणों आदि से लज्जित अनुभव करने लगते हैं और उन्हें फेंक-फाँक कर नया उपकरण खरीदने को विवश हो जाते हैं। और यह सारी दुनिया में हो रहा है। भारत भी इससे अछूता नहीं है।

बहुत बार ऐसा भी होता है कि विज्ञापनों आदि के दबाव में आकर आप नया उत्पाद खरीद लेते हैं लेकिन पुराने से पिण्ड छुड़ा नहीं पाते हैं। आप कोई नया मोबाइल, नया टीवी, नया लैप टॉप, या कोई भी और नया उत्पाद खरीद लेते हैं लेकिन पुराने वाले को फेंकने का भी मन नहीं करता।

इस तरह आपके घर में ही कबाड़ का ढेर बढ़ता जाता है। बहुत बार ऐसा भी होता है कि जिस उत्पाद की बजाय आपने नया उत्पाद खरीदा है वह भी चालू हालत में ही होता है। सत्या गुप्ता नामक एक अध्यायी ने कुछ समय पहले एक सर्वेक्षण करवाया था, जिसमें भाग लेने वाले उपरदाताओं के पास औसतन चार मोबाइल थे जो चालू हालत में थे, लेकिन काम में नहीं लिए जा रहे थे। अधर इस कबाड़, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक कबाड़, को लेकर नई चेतना जगी है और लोग फिक्रमंद होने लगे हैं। इण्डियन सेल्युलर एण्ड इलेक्ट्रॉनिक एसोसिएशन (आईसीईए) और एक नामी आईटी कम्पनी एसेंजर ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया है कि भारतीय घरों में मोबाइल और लैपटॉप मिलाकर ऐसे बीस करोड़ साठ लाख उपकरण हैं जो बेकार पड़े हैं। इनका क्या किया जाए? अब आप चौंकने के लिए तैयार हो जाएँ! विशेषज्ञों का कहना है कि यह कबाड़ असल में बहुत बड़ी संपदा है, अगर इसका ठीक से उपयोग किया जाए। हमारे घरों में ये जो बेकार मान लिए गए उपकरण पड़े हैं ये हमारे देश की समृद्धि के लिए बड़े सहायक साबित हो सकते हैं। इन उपकरणों को ई-कचरा कहा जाता है और अध्ययनों से पता चला है कि एक सर्कुलर इलेक्ट्रॉनिक्स बिज़नेस मॉडल को अपना कर सन 2035 तक इस कचरे से सात अरब डॉलर की कमाई की जा सकती है। अगर पब्लिक और प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल को अपनाया

विशेषज्ञों का कहना यह है कि भारत लैपटॉप, मोबाइल और इतर इलेक्ट्रॉनिक सामान के पुनः उपयोग, उसकी मरम्मत, उसे काम चलाऊ बनाने और उसे अद्यतन करने के काम का बहुत बड़ा बाज़ार बन सकता है। इन विशेषज्ञों के अनुसार यह सेक्टर कम से कम पचास लाख रोज़गार पैदा कर सकता है।

जाए तो यह कमाई बढ़कर बीस अरब डॉलर तक पहुँच सकती है। सरल भाषा में बताएँ तो सोच यह है कि कबाड़ मानकर तिरस्कार कर दिए गए उन उपकरणों में से ज़्यादातर को थोड़ी बहुत देखभाल, सार संभाल या रिपेयरिंग से काम में आने योग्य बनाया जा सकता है और इनका अच्छी तरह से उपयोग किया जा सकता है। जो लोग इनको संभालने या दुरुस्त करने का काम करेंगे उन्हें रोज़गार मिलेगा और इस तरह बेरोज़गारी की जिस समस्या से हमारा देश जूझ रहा है उस समस्या को कम करने में मदद मिलेगी। विशेषज्ञों का कहना यह है कि भारत लैपटॉप, मोबाइल और इतर इलेक्ट्रॉनिक सामान के पुनः उपयोग, उसकी मरम्मत, उसे काम चलाऊ बनाने और उसे अद्यतन करने के काम का बहुत बड़ा बाज़ार बन सकता है। इन विशेषज्ञों के अनुसार यह सेक्टर कम से कम पचास लाख रोज़गार पैदा कर सकता है। जब विशेषज्ञ यह दावा कर रहे हैं तो उनके पास इसके लिए पर्याप्त तर्क भी हैं। उनका सोच यह है कि भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी के लिए प्रशिक्षित और क़ाबिल तकनीशियनों और इंजीनियरों की बहुत बड़ी संख्या है और उनमें से बहुत सारे अभी रोज़गार के तलबगार हैं। अगर ठीक से योजना बनाकर काम किया जाए तो भारत विश्व का इलेक्ट्रॉनिक्स रिपेयरिंग डिस्ट्रिब्यूशन बन सकता है। इस संभावना को इस बात से भी बल मिलता है कि दुनिया के बहुत सारे अन्य देशों की तुलना में भारत में मानवीय श्रम सस्ता है इसलिए अन्य देशों से भी उपकरण हमारे यहाँ रिपेयरिंग आदि के लिए आने लगेंगे।

उपर हमने जिन सत्या गुप्ता को उद्धृत किया है वे एपिक फाउण्डेशन और वीएलएसआई सोसाइटी ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष हैं। उनके अनुसार, अगर हम अपने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट की रिपेयरिंग करा कर इस्तेमाल करते हैं तो इकॉनॉमी में तीस फीसदी वृद्धि जोड़ते हैं। कहने का मतलब यह कि अगर हम तीन साल चल चुके किसी मोबाइल को रिपेयरिंग करावा कर एक साल और चलाते हैं तो तीस प्रतिशत विदेशी मुद्रा बचा सकते हैं। यह इसलिए कि अभी भी हमारे ज़्यादातर मोबाइल और उनके पार्ट्स आयातित हैं। ऐसा करने से तैतिस प्रतिशत ई-कचरा भी कम होगा। उनके इस कथन को इस तथ्य से जोड़कर देखा जाना चाहिए कि हमारे देश में पेट्रोल और सोने के बाद सबसे ज़्यादा आयात इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का होता है। फरवरी 2021 से अप्रैल 2022 के बीच 550 अरब डॉलर के आयात बिल में अकेले इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों की हिस्सेदारी 62.7 अरब डॉलर की थी। इसका मतलब यह हुआ कि अगर हम कबाड़ मान लिये गए उपकरणों का प्रयोग करते हैं तो न केवल बहुत सारे लोगों को रोज़गार मिलेगा, विदेशी मुद्रा भी बचेगी। इसमें एक बात और जुड़ जाती है और वह यह कि मोबाइल जैसे छोटे-से उपकरण में 14 धातुएँ प्रयुक्त होती हैं और उनमें से अनेक बहुत कीमती और दुर्लभ होती हैं। उनमें से कम से कम आठ ऐसी हैं जिन्हें हमें आयात ही करना पड़ता है।

इस दिशा में हम अगर आगे बढ़ते हैं तो न केवल बचत करने और चीज़ों को बर्बाद न करने की भारतीय जीवन शैली का अनुकरण करेंगे, जो उपकरण किसी भी वजह से हमारे लिए अनुपयोगी हो गए हैं उन्हें काम चलाऊ बनाकर उन लोगों तक पहुँचा कर, जिनके पास पर्याप्त वित्तीय साधन नहीं हैं, उनकी भी सहायता करेंगे। लेकिन यह सब करने में जितना आसान है, व्यवहार में उतना आसान नहीं है। एक बड़ी बात तो यही है कि अब ज़्यादातर उत्पादक ऐसे उत्पादन बनाने लगे हैं जिन्हें रिपेयर किया ही नहीं जा सकता है। ऐसे उत्पादकों को भी विश्वास में लेना और अगर ज़रूरत पड़े तो उन पर समुचित वैधानिक या अन्य तरह का दबाव बनाकर उन्हें रिपेयर होने योग्य उपकरण बनाने के लिए प्रेरित करना ज़रूरी होगा। उनके सहयोग के बिना यह योजना आगे नहीं बढ़ सकती। वैसे भारत सरकार ने एक पोर्टल बनाया है जो वारण्टी अर्वाधि में उपकरणों आदि की रिपेयरिंग की सुविधा प्रदान करता है। अभी तक सत्रह बड़े ब्राण्ड इस पोर्टल पर आ चुके हैं।

लेकिन जब तक यह सारी योजना मूल रूप से, हमें अपनी कामनाओं पर नियंत्रण करने के अनावश्यक उत्पादों की खरीद को अपनी लालसा पर नियंत्रण करना होगा। यह देश और दुनिया के पवित्र्य के लिए बहुत ज़रूरी है।

—अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

दशलक्षण धर्म : “आत्मा के स्वाभाविक धर्म”



भागचंद जैन

जैन धर्म का पर्वराज दशलक्षण धर्म पर्व की आज 19/09/2023 को उत्तम क्षमा धर्म से शुरुआत एवं क्षमा वाणी पर्व मनाने के साथ समापन जैनधर्म एक अनादि, अनंत, शाश्वत धर्म है। जैन धर्म की शुरुआत इस अवसर्पिण काल के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान के पूर्व से है।

जैन धर्म के तीन मुख्य त्योहारों में 1) षोडश कारण भावना पर्व - भाद्रपद कृष्ण एकम से अश्विन कृष्ण एकम तक 31-32 दिनों तक मनाया जाता है। षोडश कारण भावना का पालन करने से तीर्थंकर प्रकृति का आश्रय (बंधन) होता है, 2) अष्टाहिका पर्व - यह भक्ति का पर्व है, यह वर्ष में तीन बार मनाई जाता है एवं 3) दशलक्षण धर्म पर्व - यह भी वर्ष में तीन बार आता है, लेकिन भाद्रपद में आने वाले इस पर्व को बड़े ही भक्तिभाव से मनाया जाता है। इस दौरान आत्मा के दस धर्मों की विशेष आराधना करते हैं। दस धर्मों का पालन करना साधकों, तपस्वियों के लिए

अनिवार्य है एवं श्रावकगण भी आत्म कल्याण के दश धर्मों का पालन करने की चेष्टा करते हैं।

दशलक्षण पर्व आत्मानुभूति का मार्ग प्रशस्त करता है, इसको पर्वराज भी कहा गया है। जैन धर्म में इस त्योहार का महत्वपूर्ण स्थान है। यह पर्व जिनमंदिरों में विशेष पूजा एवं बड़े ही भक्तिभाव के साथ मनाया जाता है। इस त्योहार में जैन धर्मावलंबी सामान्यतः व्यापार एवं नौकरी से अवकाश पर रहते हैं। दिगंबर धर्म में 10 दिन तक चलने वाला यह पर्व इस वर्ष 19 सितंबर भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी से प्रारंभ होकर 28 सितंबर - अनंत चतुर्दशी तक जारी रहेगा। इसी क्रम में अश्विन कृष्ण एकम, 30 सितंबर को क्षमावाणी पर्व मनाया जायेगा।

दशलक्षण धर्म पर्व जैसा की नाम से आभास होता है दस धर्मों की पूजा एवं पालना की जाती है। ये दस धर्म हैं - 1) उत्तम क्षमा, 2) उत्तम मार्दव, 3) उत्तम आर्जव, 4) उत्तम शौच, 5) उत्तम सत्य, 6) उत्तम संयम, 7) उत्तम तप, 8) उत्तम त्याग, 9) उत्तम आर्किचन एवं 10) उत्तम ब्रह्मचर्य का पालन कर आत्म शुद्धि की जाती है। आत्मानुशासन की और अग्रसर होते हैं। इन सभी दस धर्म के अंतर्गुण नाम से ही स्वतः स्पष्ट है। ये सभी दस धर्म एक दूसरे के पूरक हैं। किसी भी धर्म को पालना, साधना करने पर शेष सभी धर्म स्वतः आत्मसात हो जाते हैं एवं साधक के



जीवन का अंग बन जाते हैं।

इन दस दिनों के दौरान जैन धर्मावलंबी जिन अभिषेक, शांतिधारा, पूजा, पाठ, स्वाध्याय यथावत करते हैं। प्रति दिन नित्य नियम पूजा के साथ दसों दिन सभी दशलक्षण धर्मों की आराधना का विधान है किंतु महत्ता की दृष्टि से प्रत्येक दिन क्रमशः अलग-अलग धर्म के गुणों का विशेष वर्णन सूक्ष्मतरंग रूप में करने के साथ आत्मसात किया जाता है। दशलक्षण पर्व के दौरान जैन धर्म के मानने वाले साधना के मार्ग पर चलने हेतु व्रत, उपवास रखते हैं एवं इस अवधि में पूरी तरह सात्विक भोजन किया जाता है। बहुत से भक्त दस दिनों तक अन्न-जल ग्रहण ही नहीं करते हैं। श्रावकगण इस समय का सदुपयोग त्याग, तपस्या, आराधना और साधना का मार्ग अपना कर करते हैं। यह पर्व अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करने, आत्मशुद्धि करने एवं कर्मों का क्षय कर मोक्षमार्ग प्रशस्त करने के लिए मनाया जाता है।

जैन धर्मावलंबी इस पर्व के दौरान स्वाध्याय में पूरा ध्यान लगाते हैं। पर्व की अवधि में दिया गया दान का भी अपना महत्व है, सभी जैन धर्मावलंबी कुछ न कुछ दान देने का

अभिप्राय अवश्य रखते हैं। दशलक्षण पर्व में व्यक्ति को अपने द्वारा किए बुरे कर्मों की निर्जा करने एवम बुराई से दूर होने के लिए अवसर मिलता है। ये पर्व जीवों और जीने दो की राह पर चलने की प्रेरणा देता है। इस पर्व के अंत में अपने द्वारा की गई गलतियों पर विचार कर क्षमा मांगी जाती है। दश लक्षण पर्व आत्मशुद्धि का अवसर प्रदान करता है। इसलिए इस दौरान पंच अनुव्रत / महाव्रत यथा अहिंसा अर्थात् किसी को दुख, कष्ट न पहुँचाना, सत्य के मार्ग पर चलना, चोरी ना करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, परिश्रम से दूर रहना, जैन धर्म के सिद्धांतों को रेखांकित करता है।

जीवन को सर्वोत्तम तरीके से जीने की कला सिखाने वाले दश लक्षणों को व्यवहार में उतारने का पर्व दशलक्षण महापर्व है। दश लक्षण धर्म में प्रथम धर्म उत्तम क्षमा धर्म है। क्ष अर्थात् क्षमता अर्थात् मान का। क्षमा में अपने अहम का अहंकार का का त्याग आवश्यक होता है। यह इसका मूल सिद्धांत है। कितने भी द्वेष, क्लेश, लड़ाई, झगड़े आदि का कारण अहंकार ही है। क्षमा करना, क्षमा मांगना दोनों ही क्षमा के गुण हैं। क्षमा के भाव अपना कर हम सभी मानव जीवन को स्वर्ग से भी सांसारिक तौर पर सुंदर, सुखी, आनंद की अनुभूति वाला बना सकते हैं एवम उसी के द्वारा हम जीवन मरण से छुटकारा पाकर मोक्ष मार्ग की और प्रशस्त सकते हैं।

क्षमा के ज्ञान हेतु क्रोध की चर्चा होना पूर्णतः मनोवैज्ञानिक है। क्रोध में व्यक्ति दूसरों के साथ स्वयं का भी बहुत नुकसान कर देता है। यह एक ऐसा जहर है जिसको उत्पत्ति अज्ञानता से एवं अंत पश्चाताप से होता है। क्षमा भाव से हम परिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रव्यापी एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के झगड़े यहाँ तक की युद्ध भी समाप्त कर सकते हैं। हम अपनी जीवन यात्रा सुगम कर सकते हैं।

क्षमा से शारीरिक रोग दूर होते हैं एवम मानसिक शांति मिलती है। उल्लेखनीय है कि क्षमा धर्म या किसी भी धर्म पर जैन समाज या किसी का भी कोई भी अधिकार नहीं है, कोई भी इसे अपनाकर अपना जीवन सार्थक बना सकते हैं। हाँ, यह जरूर है की जैन धर्मावलंबी क्षमा धर्म को उत्सव, पूजा, कर्म निर्वाह के रूप में प्रति वर्ष ही नहीं हर पल मनाता है। आज के परिप्रेक्ष्य में, विध्वंसकारी नीतियों के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय क्षमा दिवस मनाने की आवश्यकता है। विश्व शांति आपके अंतःस्थल पर अंकित होगी। इस तरह जैन धर्म के बताएँ मार्ग पर चलकर विश्वशांति सुनिश्चित की जा सकती है। श्वेतांबर धर्मावलंबियों द्वारा इसे पर्युषण पर्व के रूप में 8 दिन तक, इस वर्ष 12 सितंबर से 19 सितंबर तक मनाया गया है।

—संकलन-भागचंद जैन,
अध्यक्ष जैन बैंकर्स फोरम,
जयपुर।

पुस्तक समीक्षा काव्य संग्रह : “बीच सफर में”



बाल मुकुन्द ओझा

देश और प्रदेश के सुविख्यात कवि, गीतकार, शायर और लघु कथाकार बनवारी शर्मा खामोश किसी परिचय के मोहातज़ नहीं हैं। दर्जनों प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित खामोश को 1976 से आकाशवाणी और दूरदर्शन से गीत, नज़्म कविताएँ बहुतायत से प्रसारित हुई हैं। खामोश की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पत्र पत्रिकाओं में हजारों रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। जीवन की सहज अनुभूतियों और संवेदनाओं को प्रकट करता उनका नवीनतम काव्य संग्रह बीच सफर में शीर्षक से हाल ही प्रकाशित होकर विमोचित हुआ है। बीच सफर उनका चौथा काव्य संकलन है। खामोश

की कविताओं में जिंदगी के बहुत से रंग हैं। उन्होंने बहुत साफगोई से कविताओं में अपनी बात कही है। कविता संग्रह की कविताएँ सहज ही आकर्षित करती हैं। हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में काव्य विधा के रचनाकारों का विशिष्ट योगदान रहा है। प्रस्तुत काव्य पुस्तक में प्रकृति और नैसर्गिक वातावरण को साधारण से शब्दों के माध्यम से संप्रेषित करना एक अनूठा प्रयोग है। निश्चय ही मन पर अमिट छाप छोड़ने वाली है खामोश की कविताएँ। पुस्तक केवल कविताओं का ही नहीं बल्कि भावनाओं, संवेदनाओं और अभिव्यक्ति का भी सशक्त संग्रह है। इस संग्रह में कुल 46 कविताओं को शामिल किया है। सभी कविताएँ हृदय को छूने वाली हैं। आशा है कि यह कविता संग्रह पाठकों को पसंद आएगा।

बीच सफर काव्य संग्रह में अपनी कविता मत आना में जीवन के सतरंगी संघर्ष को बयां करते हुए कवि लिखते हैं— मना किया है कुछ यादों को शाम ढले तुम मत आना। महानगरीय संस्कृति पर कवि अपनी कविता ना भाई ना में लिखते हैं— गांव को वापिस जाते जाते अपनापन क्यों छोड़ गए ?

महानगर में इसका कोई मोल नहीं है। कवि ने समाज में फैली बुराईयों पर मैने शीर्षक कविता में इन शब्दों से हमला किया है—

दुर्गों में सच्चे लोगों का जिक्र किया मैने मधुमक्खी के छत्तों को रूँ ही छेड़ दिया मैने शायद शीर्षक कविता को इन शब्दों में उकेरा—

बड़ी देर तक सोच समझ कर बात कही होगी कड़वी सच्चाई कहने में देर लगी होगी। सियासत पर अपनी पेनी निगाह रखते हुए कवि लिखते हैं— ये जो आज़ादी के नमने गाने वाले हैं फकत जुबानों के झंडे लहराने वाले हैं।

समीक्षक कृति : बीच सफर में। कवि : बनवारी शर्मा खामोश प्रकाशक : ज्योति पब्लिकेशन, बीकानेर। पृष्ठ : 96 मूल्य : 250 रुपये —बाल मुकुन्द ओझा, वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार



बाबा के जयकारों से गुंजी रामदेवरा नगरी

पोकरा/रामदेवरा, (निसं)। रामदेवरा में करोड़ों लोगों की आस्था के प्रतीक लोकदेवता बाबा रामदेव के 639वें भादवा मेले का शुभारंभ भादवा बीज रविवार को अलसुबह बाबा रामदेव की समाधि की विधिवत पूजा-अर्चना के साथ हुआ।

रविवार अलसुबह जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुरमन शर्मा, जिला कलेक्टर आशीष गुप्ता, पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान एवं गादीपति राव भोमसिंह तंवर ने बाबा रामदेवजी की समाधि का पंचामृत से अभिषेक कर उनकी विधिवत पूजा अर्चना की। इस दौरान समाधि पर नई चढ़ाई गई। साथ ही विभिन्न पुष्पमालाओं से समाधि का श्रृंगार किया गया। बाबा को मेवा मिष्ठान एवं मिश्री का भोग लगाया गया। अतिथियों ने बाबा की समाधि पर चंवर ढुलया तथा बाबा की जेत के दर्शन किए। पुजारियों द्वारा अतिथियों को बाबा का प्रसाद दिया गया व पवित्र झरी का जल आचमन करवाया गया। सभी अतिथियों ने बाबा रामदेव जी की समाधि की पूजा-अर्चना कर देश में अमन, चैन एवं खुशहाली की मंगल कामना की। मंगला आरती के अवसर पर मंदिर के प्रवेश द्वार के खुलते ही



रामदेवरा में बाबा रामदेवजी की दूज पर भक्तों ने दर्शन किये।

बाबा के भक्तजनों ने बाबा के जयकारे लगाते हुए बड़े उत्साह के साथ मंदिर में प्रवेश किया। जयकारों से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा। सभी

लोकदेवता बाबा रामदेवजी के 639वें भादवा मेले का शुभारंभ

व्यवस्थाओं के बाद भी बाबा के भक्तों की पांच किलोमीटर से भी लम्बी लम्बी कतारें लगी हैं। वहीं प्रशासन द्वारा छाया व पानी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण लोगों को दर्द सहना पड़ रहा है। जिला कलेक्टर आशीष गुप्ता एवं पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान ने मेले की व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे भक्तों की सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध रखें एवं मॉनिटरिंग करते रहें। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सफाई, बिजली एवं पानी की व्यवस्थाओं को सुचारु रखने की बात भी कही। साथ ही सभी अधिकारियों को टीम भावना से काम करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर सपर्यक समंदर सिंह तंवर, उपखंड अधिकारी गोपाल परिहार, पणियाणा उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश, बोडीओ किशोर कुमार सहित पुलिस व प्रशासन के आला अधिकारी और मंदिर समिति के सदस्य उपस्थित थे।

वर्षा नहीं होने से फसलों को

नुकसान पहुंचा

साडुलपुर, (निसं)। उपखंड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में अगस्त महीने में मानसून लगभग शुष्क रहा। वहीं जुलाई महीने में लहरा रही फसलें अगस्त में मानसून का ब्रेक होने के कारण लंबे अंतराल के बाद भी वर्षा नहीं होने से मूंग, चवलॉ व दहन की फसलों में काफी नुकसान पहुंचा। मगर अब बीते एक-दो दिनों में मानसून क्षेत्र में सक्रिय है। हालांकि रविवार को कई जगहों पर बरसात हुई है। वहीं ग्रामीण क्षेत्र में लोग लावणी कटाई में लगे हुए हैं। हर दिन बूंदबांदी आंधी, तुफान से लावणी कटाई में खासा असर देखने को मिल रहा है। बदले मौसम के चलते किसानों की चिंता की लकीरें दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। कर्ज लेकर की गई खेती मानसून कमजोर रहने तथा अब आंधी-तुफान की मार के कारण पैदावार औसत कम होने के कारण घर खर्च चलाना भी बहुत मुसीबतमय हो गया है। उपखंड के भाकरॉ गांव के समाजसेवी किसान नेतराम मेहरा का कहना है कि हर साल मौसम की मार के कारण किसानों की कमर टूटती जा रही है। सरकार को तर्फ से किसानों के लिए कोई टोस कदम नहीं उठाये जा रहे हैं।



राशिफल

सोमवार 18 सितम्बर, 2023

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2080, चित्रा नक्षत्र दिन 12:08 तक, ऐन्द्रियन योग रात्रि 4:23 तक, गर करण दिन 12:40 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरु-मेघ, शुक्र-

कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में। आज रविवार दिन 12:08 से आरम्भ होगा। मूद्रा रात्रि 1:12 से मंगलवार दिन 1:44 तक है। आज हरितालिका निवेद है। चन्द्रस्त जयपुर में रात्रि 8:21 पर होगा। आज रोट तीज (जैन) है। श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय 7:48 तक, शुभ 9:14 से 10:50 तक, चर 1:52 से 3:23 तक, लाभ-अमृत 3:23 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:17, सूर्यास्त 6:25

मेघ व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। मन:स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वृष मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त हो सकते हैं। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवाहित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। आज अर्णगल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मिथुन परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक आयोजन हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु आर्थिक/वित्तीय मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। संभावित खोस से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कर्क घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। परिवार में सामाजिक-शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

मकर व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

सिंह परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कुंभ नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटकें हूए कार्य बनने लगेगी। व्यावसायिक मामलों में आज लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

कन्या आर्थिक कार्यों से अटकें हूए कार्य बनने लगेगी। संभावित धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। घर-परिवार के कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी।

मीन चन्द्रमा अग्रम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य विगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।